

**Dr. Kumari Priyanka**

**History department**

**H.D Jain college, ara**

**Notes for, B.A part 2, paper 3**

**Topic:-अरबों का सिंध आक्रमण का स्वरूप (Nature of the Invasion)**

मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण-जिस समय मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया, उसकी उम्र सिर्फ 17 वर्ष थी। उसने एक सुसज्जित सेना के साथ, जिसमें खलीफा द्वारा भेजे गए 6,000 सीरियाई सिपाही भी थे, शिराज से सिंध के लिए प्रस्थान किया। मकरान होता हुआ वह थट्टा के नजदीक देवल बंदरगाह पहुँचा। कासिम के आगमन की खबर सुनकर भी दाहिर ने देवल की सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था नहीं की थी। उसने भयभीत होकर अथवा सामरिक दृष्टिकोण से सिंधु के पश्चिमी प्रदेशों को छोड़ दिया और पूर्वी किनारे पर युद्ध को तैयारी की। अतः कासिम ने नगर पर आसानी से अधिकार कर लिया। चचनामा के अनुसार एक ब्राह्मण की सहायता से कासिम ने देवल के मंदिर में लगे लाल झण्डे को गिरवा दिया, जिससे नगरवासी भयभीत हो उठे। उनका आक्रमणकारियों का मुकाबला करने का हौसला पस्त पड़ गया। कासिम ने जी भरकर नगर को लूटा तथा अनेक नगरवासियों की हत्या करवाई। टैक्स में एक मस्जिद का निर्माण किया गया तथा 4,000 मुसलमानों को नगर की सुरक्षा के लिए वहाँ बसाया गया। लूट में कासिम को बहुत अधिक धन मिला। लूट के माल का पाँचवां जैसा भाग तथा 75 स्त्रियाँ हज्जाज की सेवा के लिए भेज दी गईं। शेष धन सैनिकों में बाँट दिया गया। अनेक स्त्रियों और बच्चों को गुलाम बना दिया गया। देवल से कासिम नेरून (निरून) पहुँचा तथा बौद्धों की सहायता से उसने इस नगर पर अधिकार कर लिया। इसी प्रकार, उसने बिना किसी विशेष प्रतिरोध के सिविस्तान या सेहवान पर भी अधिकार कर लिया। इस कार्य में अनेक भारतीयों ने भी कासिम की सहायता की। अब सिंधु नदी की मुख्य धारा मेहरान को पार कर वह ब्राह्मणबाद (बहमनाबाद) के किले की तरफ बढ़ा। दाहिर को भी बाध्य होकर किला छोड़कर कासिम का मुकाबला करने लिए आगे बढ़ना पड़ा। 20 जून, 712 को राऔर (रावर, राजौर) के निकट दाहिर एवं कासिम की मुठभेड़ हुई।

यह एक भयंकर युद्ध था। चचनामा के अनुसार, दाहिर ने कासिम के छक्के छुड़ा दिए, उसको सेना में भगदड़ मच गई, परंतु इसी समय हाथी पर बैठे हुए दाहिर को एक तीर आ लगा और उसकी मृत्यु हो गई। इससे दाहिर की सेना के पाँव उखड़ गए। विधवा रानी के जिम्मे रावर का किला छोड़कर दाहिर का पुत्र जयसिंह बहमनाबाद की सुरक्षा के लिए आगे बढ़ गया। दाहिर की विधवा रानी ने रावर के किले की

सुरक्षा का भरपूर प्रयास किया, परंतु विफल होकर उसे अपने सहयोगियों से साथ जौहर व्रत का पालन करना पड़ा। रावर पर अधिकार कर कासिम बहमनाबाद की तरफ बढ़ा। जयसिंह ने वीरतापूर्वक कासिम का सामना किया, लेकिन उसके मंत्री ने विश्वासघात कर आक्रमणकारी का साथ दिया, फलतः जयसिंह की पराजय हुई। कासिम ने किले पर अधिकार कर लिया। उसने जयसिंह को भागने पर मजबूर किया, दाहिर को एक विधवा से स्वयं विवाह कर लिया तथा उसकी दो पुत्रियों- सूयदिवी एवं परमालदेवी को हज्जाज के पास नजराने के तौर पर भेज दिया। बहमनाबाद से कासिम दाहिर की राजधानी आलोर गया तथा उसपर अधिकार कर लिया। उसका अगला निशाना मुलतान बना। दो माह के कड़े संघर्ष के पश्चात ही वह मुलतान पर अधिकार कायम कर सका। मुलतान की विजय कासिम की अंतिम विजय थी। कासिम कन्नौज आक्रमण की योजना बना ही रहा था कि नए खलीफा सुलेमान ने उसको 713 ई० में वापस बुला लिया।

**दाहिर की असफलता के कारण:-** आक्रमणकारियों का सामना करने में दाहिर की विफलता और अरबों की सफलता के अनेक कारण थे। बहुत हद तक दाहिर अपनी पराजय के लिए स्वयं उत्तरदायी था। दाहिर ने अरब-आक्रमणकारियों को गंभीरतापूर्वक नहीं लिया। इसी कारण जिस समय कासिम ने देवल पर आक्रमण किया, उसी समय उसने जलबेड़े की सहायता से कासिम को पहुँचनेवाली सैनिक सहायता को रोकने का प्रयास नहीं किया। देवल के पश्चात भी जब तक कासिम बहमनाबाद के निकट नहीं पहुँच गया, उसने उसे रोकने का विशेष प्रयास नहीं किया। इतना ही नहीं, उसने कासिम को सिंधु नदी भी आसानी से पार करने दी। उसकी यह भूल उसके लिए महँगी साबित हुई। दाहिर की सैनिक शक्ति भी दुर्बल थी। उसके अधिकांश सिपाही और सेनानायक अनुभवहीन थे और उनमें योग्यता का अभाव था, जबकि कासिम की सेना कुशल एवं दक्ष थी। कासिम ने अपनी सेना का संचालन भी सुचारु रूप से किया, जो दाहिर नहीं कर सका। दूसरी बात यह थी कि कासिम को अपने सहयोगियों का जितना समर्थन प्राप्त था, उतना दाहिर को नहीं था। अरबों के समक्ष इस्लामधर्म से भी अधिक प्रेरक तत्व था धन प्राप्त करने की लालसा। इसलिए वे पूरे जी-जान से लड़े, परंतु दाहिर को तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों के कारण सबका समर्थन नहीं मिल सका। इतना ही नहीं, दाहिर के मंत्रियों, प्रांतपतियों एवं उसके राज्य की जनता ने भी अनेक मौकों पर अरबों की ही सहायता की। वस्तुतः, अरबों की सिंध-विजय का श्रेय बहुत हद तक देशद्रोही भारतीयों को दिया जा सकता है, न कि अरबों की श्रेष्ठ सैनिक क्षमता को।